

डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका का सुसमाचार, सत्र 12, यीशु के साथ चमत्कारिक मुलाकातें, लूका 8:22-56

© डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैनियल डार्को द्वारा लूका के सुसमाचार पर दिए गए अपने व्याख्यान हैं। यह सत्र 12 है, यीशु के साथ चमत्कारी मुलाकातें, लूका 8:22-56।

लूका के सुसमाचार पर बाइबिल ई-लर्निंग व्याख्यान श्रृंखला में आपका स्वागत है।

अब तक, हम कुछ बातों पर चर्चा कर चुके हैं, और आखिरी बात जो हमने लूका के सुसमाचार के 8वें अध्याय में चर्चा की थी। हम मुख्य रूप से बीज बोने वाले के दृष्टांत पर विचार करते हैं, जिसमें सुनने और ग्रहण करने पर जोर दिया गया है। यहाँ से अध्याय 8 के अंत तक आगे बढ़ते हुए, अब हम परमेश्वर के राज्य के दूसरे भाग पर विचार करने जा रहे हैं।

अध्याय की शुरुआत यीशु द्वारा परमेश्वर के राज्य की घोषणा करने और उसे लाने के बारे में बात करके होती है। अध्याय 8 में परमेश्वर के राज्य का दूसरा भाग वह है जहाँ लूका चमत्कारी कार्यों का वर्णन करता है। लूका के अनुसार, परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर जो कर रहा है, उसमें घोषणा और चमत्कारी कार्य साथ-साथ चलते हैं।

और इसलिए, मेरे साथ धैर्य रखें क्योंकि हम लूका अध्याय 8 में यीशु के साथ चमत्कारिक मुठभेड़ों को देखते हैं, जो कि श्लोक 22 से 56 तक शुरू होता है। पहला विवरण जो हम देखेंगे वह है कि यीशु ने तूफान पर काबू पाया, प्रकृति पर अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग किया। और फिर हम देखेंगे कि यीशु ने सेना में एक ऐसे व्यक्ति से मुलाकात की जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त था, और दुष्टात्माओं पर अपनी शक्ति और अधिकार का प्रयोग किया।

और फिर, अंत में, हम एक बहुत ही दिलचस्प परिदृश्य से निपटते हैं, दो महिलाओं से संबंधित एक चमत्कार। एक यहूदी महायाजक, यार्स की बेटी है, और दूसरी एक महिला है जो खून की समस्या से जूझ रही है और यीशु उन्हें कैसे संबोधित करेंगे। तो, आइए यीशु के साथ इन चमत्कारी मुठभेड़ों में से पहले को जल्दी से देखना शुरू करें।

पहली मुलाकात यीशु और शिष्यों के साथ होगी, और हम पद 22 से पढ़ते हैं। एक दिन, वह अपने शिष्यों के साथ नाव पर चढ़ गया, और उसने उनसे कहा, 'आओ हम झील के दूसरी ओर चलें।' इसलिए, वे चल पड़े, और जब वे नाव चला रहे थे, तो वह सो गया।

और एक आँधी आई, और झील पर पानी भरने लगा, और वे खतरे में पड़ गए। तब उन्होंने जाकर उसे जगाया, और कहा, हे रब्बी, हे रब्बी, हम नाश हुए जाते हैं।

और वह जाग उठा, और उसने हवा और प्रचंड लहरों को डांटा, और वे थम गईं, और शांति हो गई। उसने उनसे कहा, तुम्हारा विश्वास कहाँ है? और वे डर गए, और वे अचंभित होकर एक

दूसरे से कहने लगे, फिर यह कौन है जो हवा और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी आज्ञा मानते हैं? यह उन वृत्तांतों में से एक है जो बहुत उल्लेखनीय है। कुछ सुसमाचार लेखक अपने वृत्तांतों को इस तरह से बताते हैं जैसे कि सभी शिष्य और यीशु उस समय सो रहे थे जब घटना घटने लगी, और इसलिए शिष्य घबराकर जाग गए और फिर यीशु से सलाह ली।

लेकिन लूका के अनुसार, लूका ने यह दर्शाया कि यीशु ही सो रहे थे। कल्पना कीजिए कि तूफान के बीच में, यीशु सो रहे थे। यीशु के साथ चमत्कारी मुठभेड़ों को देखते हुए मैं इस वृत्तांत से सिर्फ़ तीन बातें उजागर करना चाहूँगा।

सबसे पहले, यीशु जिन शिष्यों से बात कर रहे हैं, वे लोग हैं जो इलाके से बहुत परिचित हैं। आपको याद होगा कि सुसमाचार में पहले हमें बताया गया था कि उनमें से चार वास्तव में मछुआरे थे। यीशु उनसे झील के किनारे मिले।

वे अच्छे तैराक हैं। उन्हें पता है कि पानी कैसे काम करता है। वहाँ कोई बहुत बड़ी झील नहीं है, इसलिए उन्हें पता होना चाहिए कि क्या करना है, क्या नहीं करना है, और यहाँ क्या-क्या होने वाला है।

लेकिन पेशेवर होने के नाते वे ऐसी स्थिति में आ गए जहाँ यह उनकी क्षमता से परे था। लेकिन उस तूफान के बीच में दो चीज़ें हुईं। एक, शिष्यों को लगा कि उनकी जान को खतरा है।

वे किसी भी समय नष्ट हो सकते थे। लेकिन दूसरी बात जो हो रही थी वह यह थी कि उस दौरान यीशु आराम से सो रहे थे। वाह।

एक समूह इतना भयभीत था कि उसे समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें। यीशु सो रहे थे। यह बात तब पता चलती है जब हम परमेश्वर के राज्य और यीशु द्वारा परमेश्वर के राज्य को लाने को देखते हैं।

यीशु, आपकी तरह, मेरी तरह, कभी-कभी थक जाता है, और सो जाता है। यह उन मौकों में से एक हो सकता है जब वह इतना थक गया था कि सो गया। मैं अपने बच्चों को बताना पसंद करता हूँ, नींद के लिए सबसे अच्छा उपाय क्या है? क्योंकि वे कहना पसंद करते हैं, ओह, पिताजी, कभी-कभी जब आप अपना भोजन लेते हैं, तो आप आरामकुर्सी पर बैठते हैं, और आप बस अपना पैर उठाते हैं, और आप चले जाते हैं।

मैंने पूछा, नींद के लिए सबसे अच्छा उपाय क्या है? और जवाब हमेशा एक ही होता है। थकान। अगर आप कड़ी मेहनत करते हैं और थक जाते हैं, तो आपको सोने की अनुमति है।

यीशु सो रहे थे। क्या इसका कारण यह है कि उन्हें इसकी परवाह नहीं है? नहीं, यह बात नहीं है। हम केवल इतना जानते हैं कि वह सो रहे थे, और शिष्य तूफान के बीच में भयभीत थे।

लेकिन फिर इस पेरिकोप में कुछ और भी दिखाई देगा, और वह है यीशु की शक्ति और अधिकार। जब वह जागेगा, तो वह प्रकृति पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेगा। हाँ, जब यीशु

चमत्कार करता है, तो कुछ लोगों ने अनुमान लगाया है कि जब यीशु चंगा करता है, तो कोई कारण प्रदान किया जाना चाहिए जिसके लिए बीमार व्यक्ति ठीक हो जाएगा, यह कहने के अलावा कि यह चमत्कार था।

जब 20वीं सदी में यीशु ने दुष्टात्माओं को बाहर निकाला, तो ऐसे विचार-धाराएँ थीं जो यह तर्क देने की कोशिश करती थीं कि लोग दुष्टात्माओं से ग्रस्त नहीं थे, बल्कि यीशु ने कुछ किया था, और उनकी मनोवैज्ञानिक समस्याएँ हल हो गई थीं। लेकिन यहाँ, यीशु प्रकृति से निपट रहे हैं। और अगर आपको संदेह है कि लूका के वृत्तांत में क्या हो रहा था, या जैसा कि अन्य सुसमाचार लेखक बताते हैं, कि यह धमकी देने वाला नहीं था, तो मैं आपको याद दिला दूँ कि पतरस एक पेशेवर मछुआरा था।

और उसका भाई भी ऐसा ही था। और ज़ेबेदी के बेटे भी ऐसे ही थे। वे पेशेवर मछुआरे थे।

इसलिए, झील पर उन्हें डराने वाली कोई भी बात इस तथ्य को दर्शानी चाहिए कि कुछ ऐसा हो रहा है जो उनके नियंत्रण से परे है। यीशु अपना अधिकार प्रदर्शित करने के लिए आते हैं। देखिए, परमेश्वर के राज्य का एक हिस्सा वह है जहाँ परमेश्वर स्थिति पर अपना शासन चलाता है।

और यहाँ, तूफ़ान के बीच में भी, यीशु ने अपने अधिकार का प्रयोग किया। हमें बताया गया है कि उसने तूफ़ान को डांटा। यह लूका की भाषा है।

उसने तूफ़ान को इस तरह डांटा मानो तूफ़ान के पास सुनने के लिए कान हों। और बाद में, शिष्यों ने कहा, यह कौन आदमी है जो बोलता है, प्रकृति, तूफ़ान, पानी, उसकी बात सुनते हैं और आज्ञा मानते हैं। यही अधिकार है।

यह मनुष्य के पुत्र में है। आप देखिए, यीशु इसे प्रदर्शित करते हैं, और शिष्यों को यह पता चलता है। और वह यहाँ एक केंद्रीय मुद्दा स्थापित करता है।

वे क्यों घबरा रहे थे? यीशु ने उन्हें याद दिलाने के लिए सीधे विषय को आगे बढ़ाया, देखो, यहाँ विश्वास का मामला है। उन्हें विश्वास करना चाहिए और महान और शक्तिशाली चीजों को घटित होते देखना चाहिए। वे विश्वास क्यों नहीं कर रहे थे? श्लोक 25.

उसने कहा, तुम्हारा विश्वास कहाँ है? तुम्हारा विश्वास कहाँ है? और वे डर गए। और अचम्भा करके एक दूसरे से कहने लगे, फिर यह कौन है, जो आँधी और पानी को भी आज्ञा देता है, और वे उसकी मानते हैं?

खैर, आइए फिर से देखें कि आपका विश्वास कहाँ है। ग्रीक शब्द पिस्टिस के दो घटक हैं। और जब यीशु ने सरल प्रश्न पूछा, आपका विश्वास कहाँ है, तो वह एक बहुत ही गहरा प्रश्न पूछ रहा था।

आस्था उच्चारण और भरोसा है। आस्था वह है जिस पर मैं विश्वास करता हूँ, और इसलिए मैं खुद को उसके भरोसे छोड़ सकता हूँ। ऐसा नहीं है, मेरा मानना है, लेकिन एक मिनट रुकिए, और मैं विचार कर सकता हूँ कि मैं इसके बारे में कुछ करना चाहता हूँ या नहीं।

नहीं, मैं यीशु पर विश्वास करता हूँ, इसलिए मैं खुद को उसकी देखभाल में सौंप सकता हूँ। यीशु ने कहा कि मैं नाव में तुम्हारे साथ हूँ। तुम्हारा विश्वास कहाँ है? तूफ़ान के बीच में।

इससे पहले कि आप शिष्यों का न्याय करें। मैं आपके बारे में नहीं जानता। मैं वोल्टा झील के किनारे बड़ा हुआ हूँ।

दुनिया की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील घाना है। और मैंने इसमें तैराकी की। मैं सचमुच एक और नदी से शायद डेढ़ घंटे या शायद डेढ़ मील की दूरी पर रहता हूँ।

एक तेज़ बहने वाली नदी, स्कोको नदी, वह जगह है जहाँ हम धारा के विपरीत तैरना सीखते हैं। और यह गहरी है, और लगभग हर साल, इसमें कोई न कोई मरता है। मुझे वोल्टा की कलमा झील या स्कोको नदी में गोता लगाने में सहजता महसूस होती है, या जब मैं अकरा आता हूँ, तो कभी-कभी समुद्र में कूद जाता हूँ, लेकिन मैं आपको बता सकता हूँ कि यहाँ जो वर्णन किया जा रहा है, उससे मैं डर जाऊँगा।

मैं डर जाऊँगा। अगर पीटर डर गया होता, तो मैं भी डर जाता। लेकिन देखिए, यीशु, यह जानते हुए भी कि ऐसे वैध कारण हो सकते हैं जिनके लिए कोई डर सकता है, फिर भी पूछते हैं, तुम्हारा विश्वास कहाँ है? क्योंकि परमेश्वर के राज्य में, विश्वास यहाँ एक केंद्रीय मुद्दा है।

पिछले व्याख्यान में हमने सुनने के बारे में बात की थी। दूसरा भाग है विश्वास करना। परमेश्वर ने अपने पुत्र के माध्यम से जो कहा है, उस पर विश्वास करना और जो उसने कहा है, उस पर स्वयं को सौंपना।

यीशु ने इसे एक शिक्षाप्रद सबक के रूप में इस्तेमाल किया ताकि उन्हें याद दिलाया जा सके कि अगर वे उस पर विश्वास करते हैं, तो सब कुछ संभव है। क्योंकि उसके पास हवा को डांटने की शक्ति है, और वह रुक जाएगी।

झील के किनारे पले-बढ़े पेशेवर मछुआरे जो कुछ भी देखेंगे, उसे देखकर आश्चर्यचकित हो जाएंगे क्योंकि उन्होंने कभी भी तूफान से लेकर शांति तक की लहरों का इतना तेज़ बदलाव नहीं देखा है। इससे पहले कि हम अगले चमत्कार पर नज़र डालें, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि हममें से ज़्यादातर लोगों को अपने जीवन में तूफानों का सामना करना पड़ सकता है। और हाँ, जो लोग यीशु में विश्वास करते हैं, उन्हें अपने जीवन में अभी भी कुछ तूफानों का सामना करना पड़ सकता है।

आप जिन तूफानों से गुज़रते हैं, उनका इस बात से कोई लेना-देना नहीं है कि आप यीशु के करीब हैं या नहीं। शिष्य वहीं उसके साथ थे, लेकिन फिर भी तूफान आया। लेकिन अगर आप खुद को उस स्थिति में पाते हैं, तो याद रखें कि यीशु के सो जाने का मतलब यह नहीं है कि वह मौजूद नहीं था।

तथ्य यह है कि वह सो रहा था इसका मतलब यह नहीं था कि उसे परवाह नहीं थी। तथ्य यह है कि परिस्थितियाँ ऐसी लगती हैं जैसे कि वह उसके साथ नहीं था, इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पास इसके बारे में कुछ करने की शक्ति नहीं है। इस मामले में, उसने बात की।

उसने हवा को डांटा। और वह रुक गई। लूका हमें यह सुझाव देता है कि पूरी बात यह है कि यीशु शिष्यों को उस पर भरोसा करना सिखाना चाहता था।

इसलिए, उसने उनसे पूछा, तुम्हारा विश्वास कहाँ है? दूसरे शब्दों में, तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं कर सकते? मैं यहाँ तुम्हारे साथ हूँ। हम एक साथ नीचे नहीं जा रहे हैं। लेकिन ल्यूक यह नहीं कह रहा है।

लूका यह नहीं कह रहा है कि जब भी आप तूफानों का सामना करते हैं, तो इसका मतलब है कि आपके पास कोई विश्वास नहीं है। नहीं, लूका ऐसा नहीं कह रहा है। लूका सिर्फ यीशु की सेवकाई में इस विशेष अवसर का उपयोग करके थियोफिलस और बाद के पाठकों का ध्यान उस अवसर की ओर आकर्षित कर रहा है जिसमें यीशु ने अपने शिष्यों के विश्वास को मज़बूत करने के लिए इसका इस्तेमाल किया था।

इससे आगे कुछ भी, और जो लोग इससे यह निष्कर्ष निकालते हैं कि यदि आप किसी तूफान से गुज़र रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आपके पास विश्वास नहीं है, यह समस्याग्रस्त है। मुझे नहीं लगता कि यीशु यह सिखाते हैं, और मुझे नहीं लगता कि यहाँ मुद्दा यह है। तो, यीशु के साथ चमत्कारी मुठभेड़ें।

पहला, तूफान का स्वामी यीशु तूफान को शांत करता है। दूसरा, हम लूका अध्याय 8 में दूसरे चमत्कार पर जाते हैं, और यह किसी ऐसे व्यक्ति से संबंधित है जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त होगा, और यीशु दुष्टात्माओं पर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करेगा। हम श्लोक 26 से पढ़ते हैं।

फिर वे गिरेसनियों के देश में पहुँचे, जो गलील के सामने है। जब यीशु किनारे पर उतरा, तो उन्हें एक आदमी मिला जो शहर का रहनेवाला था और दुष्टात्माओं से ग्रस्त था। उसने बहुत दिनों से कपड़े नहीं पहने थे।

वह घर में नहीं बल्कि कब्रों के बीच में रहता था। जब उन्होंने यीशु को देखा, अर्थात् दुष्टात्माओं को, तो वह चिल्लाया और उसके सामने गिर पड़ा और ऊँची आवाज़ से कहा, " हे यीशु, सर्वोच्च परमेश्वर के पुत्र, मुझसे तेरा क्या काम? मैं तुझसे विनती करता हूँ, मुझे पीड़ा न दे, क्योंकि उसने एक अशुद्ध आत्मा को उस आदमी से बाहर निकलने की आज्ञा दी थी।

कई बार राक्षस ने उसे जकड़ लिया था। उसे सुरक्षा घेरे में रखा गया और जंजीरों और बेड़ियों से बांध दिया गया। लेकिन वह बेड़ियाँ तोड़ देता और राक्षस उसे रेगिस्तान में ले जाता।

यीशु ने उससे पूछा, " तेरा क्या नाम है?" उसने कहा, "सेना।" क्योंकि बहुत-सी दुष्टात्माएँ उसमें समा गई थीं। और वे उससे विनती कर रहे थे कि हमें अथाह कुण्ड में जाने की आज्ञा न दे।

अब, सूअरों का एक बड़ा झुंड पहाड़ी पर चर रहा था। और उन्होंने उससे विनती की कि उन्हें यहाँ आने की अनुमति दे। इसलिए उसने उन्हें अनुमति दे दी।

फिर, राक्षस आदमी से बाहर निकलकर सूअरों में घुस गए। और वे खड़ी ढलान से नीचे झील में जा गिरे और डूब गए। यहाँ स्पष्टीकरण के बिंदु हैं।

ल्यूक के विश्वदृष्टिकोण में, दुष्ट आत्माएँ भौतिक दुनिया में मौजूद हैं और इस हद तक शामिल हैं कि वे मानव जीवन में शामिल हो सकती हैं। ल्यूक के विश्वदृष्टिकोण में, दुष्ट आत्माएँ व्यक्ति को अपने वश में कर सकती हैं, व्यक्ति के जीवन पर नियंत्रण कर सकती हैं, और ऐसे लक्षण दिखाएँ शुरू कर सकती हैं जो अजीब और विचित्र हैं। प्राचीन दुनिया की विश्वास प्रणालियाँ कई मामलों में आज की विश्वास प्रणालियों से बहुत अलग हैं।

उदाहरण के लिए, बीमारियों या रोगों को अक्सर आध्यात्मिक कारणों से जोड़ा जाता है। यह एक ऐसी दुनिया है जिसमें माना जाता है कि बुरी आत्माएँ सभी तरह की चीज़ों को प्रभावित कर सकती हैं। ठीक उसी तरह जैसे अच्छी आत्माएँ किसी को अच्छे काम के लिए प्रभावित कर सकती हैं।

ऐसा माना जाता है कि अच्छी आत्माएँ व्यक्ति को कुछ खास काम करने की शक्ति दे सकती हैं। बुरी आत्माएँ साहस और महान काम करने की क्षमता प्रदान कर सकती हैं। उसी तरह, बुरी आत्माएँ आत्म-विनाश को प्रभावित कर सकती हैं।

जैसा कि आप उस तरह के विश्वदृष्टिकोण की कल्पना करते हैं, हालांकि शायद यह आपके विश्वदृष्टिकोण से बहुत दूर है, कल्पना करें कि वे झील पार करके गैर-यहूदी भूमि में गैर-यहूदी क्षेत्र में चले गए। और इसलिए दुष्ट आध्यात्मिक गतिविधि के संपर्क में आना अपेक्षित ही है।

इसका मतलब यह नहीं है कि यहूदियों के पक्ष में दुष्ट आध्यात्मिक गतिविधि नहीं थी। क्योंकि मैंने आपको इस व्याख्यान में पहले बताया था कि यीशु की मातृभूमि नासरत में भी, उसने आराधनालय में किसी से दुष्टात्माएँ निकाली थीं। लेकिन यहाँ, वे गैर-यहूदी क्षेत्र में हैं।

कल्पना कीजिए कि वह इस आदमी को किस विश्वास प्रणाली में देखता है और कैसे कुछ चीज़ें प्रकट होने लगती हैं। तो, अगर आप पश्चिमी दुनिया में हैं, तो मेरे साथ इसकी कल्पना करें। अगर आप दक्षिण अमेरिका में हैं, तो मैं जो कह रहा हूँ वह आपके लिए बिल्कुल भी अजीब नहीं है।

क्योंकि आप मानते हैं और ऐसे लोगों को देखा है जो भूत-प्रेत से ग्रस्त हैं या कथित तौर पर भूत-प्रेत से ग्रस्त हैं और उन्होंने सभी तरह की स्थितियों को प्रकट किया है। यदि आप अफ्रीका में हैं, तो आप इस तरह की स्थिति से घर पर ही हैं। जहाँ भूत-प्रेत के कब्जे में विश्वास किसी को ले जाने और उन्हें उनकी प्राकृतिक मानवीय क्षमता से परे सभी तरह के बुरे कारणों में ऊर्जा, क्षमता प्रदान करने के लिए माना जाता है और देखा जाता है।

अगर आप एशियाई देशों में हैं, तो यह सच है कि आप भी ऐसा ही अनुभव करते होंगे। तो, कल्पना कीजिए कि यीशु किसी ऐसे व्यक्ति के संपर्क में आते हैं जो दुष्टात्मा से ग्रस्त है। मैं यीशु के साथ इस चमत्कारी मुलाकात से जुड़ी कुछ बातें भी बताऊँगा।

और इसे अपने दिमाग में हमेशा बनाए रखें। लूका ने कहा कि यीशु परमेश्वर के राज्य का प्रचार करते फिरते हैं। अध्याय 8, श्लोक 1 और 2। परमेश्वर के राज्य की घोषणा करना और परमेश्वर के राज्य को अपने साथ लाना।

शासन और शक्ति की घोषणा करना और उसे अपने साथ लाना। जब वह प्रकट होगा, तो परमेश्वर के उद्देश्य के विरुद्ध काम करने वाली प्रत्येक आध्यात्मिक शक्ति उसे पहचान लेगी। और वे उसकी शक्ति के अधीन हो जाएँगे।

शिष्यों को आमंत्रित करना और उनसे संवाद करना कि यदि वे केवल परमेश्वर के राज्य की शक्ति में चलें और चलें, तो कोई भी दुष्ट आत्मा उन पर विजय नहीं पा सकती। अब, आइए जॉर्डन के उस पार की चौकियों पर वापस जाएँ।

और झील के उस पार। और चलिए कुछ चीज़ें देखते हैं। एक।

इस घटना का संदर्भ डेकापोलिस है। जॉर्डन के पूर्व में दस शहरों का क्षेत्र। इस आदमी की दुर्दशा यह थी कि वह राक्षसों से ग्रस्त था।

और राक्षसों को सेना कहा जाता है। जब वह उनसे पूछता है, तुम्हारा नाम क्या है? वह कहता है सेना। सेना, हमें ठीक से पता नहीं है कि यहाँ क्या हो रहा है।

लेकिन लीजन वह भाषा है जिसका इस्तेमाल रोमन सेना में 6,000 की सेना कंपनी को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। इससे पता चलता है कि एक व्यक्ति में इतने सारे राक्षस काम कर रहे थे। यह कैसे संभव है? मुझे नहीं पता।

इतने सारे अंधेरे बलों के होते हुए भी राक्षस किसी को रहस्यमयी तरीके से कैसे अपने वश में कर सकते हैं? मुझे नहीं पता। मुझे नहीं पता। लेकिन एक मिनट के लिए मेरे साथ रहिए कि एक विश्वास प्रणाली है कि यह दुष्ट आत्मा किसी व्यक्ति को महसूस कर सकती है और उस पर कब्ज़ा कर सकती है।

और यीशु उस संदर्भ में परिस्थितियों से निपटने के लिए काम कर रहे हैं। हमें बताया गया है कि जब यीशु का सामना इस व्यक्ति से हुआ, तो उसमें कुछ लक्षण दिखने लगे। और लक्षण इस प्रकार हैं।

उस आदमी ने कपड़े नहीं पहने थे। वह नंगा था। वह अजीब था।

वह बहुत हिंसक और आक्रामक था। उसे बेड़ियों में जकड़कर पहरे में रखा गया था। ल्यूक ने हमें बताया कि उस पर आत्मा का कब्जा था और वह इतना हिंसक हो गया कि उन्हें उसे जंजीरों में बांधना पड़ा।

अगर यह काफी नहीं है, तो ल्यूक हमें अपने निवास के बारे में बताता है। ल्यूक हमें बताता है कि वह कब्रों में रहता था। अब, अगर यह आपको कोई संकेत नहीं देता है या आप जहाँ रहते हैं या जहाँ आप इस व्याख्यान का अनुसरण कर रहे हैं, उसके कारण आपको कोई संकेत नहीं देता है, तो कब्र प्राचीन संस्कृतियों में मृतकों का स्थान है।

यह एक ऐसी जगह है जहाँ भूत-प्रेत निवास करते हैं। यह एक ऐसी जगह है जहाँ मृतकों की आत्मा सक्रिय रहती है। यह एक ऐसी जगह है जहाँ आध्यात्मिक क्षेत्र में अंधकार की सभी तरह की ताकतें अपना घर पाती हैं।

कब्र एक ऐसी जगह है जहाँ कभी-कभी अंडरवर्ल्ड के देवता काम करते हैं। राक्षस-ग्रस्त व्यक्ति उस जगह पर रहना पसंद करता था। बिना कपड़ों के नग्न अवस्था में।

हिंसक, इसका मतलब है कि वह वास्तविक लोगों से शालीनता से नहीं मिल सकता था। लेकिन हमें यह भी बताया गया है कि जब आत्माएं उसे हिंसक तरीके से धकेलना शुरू करती हैं, तो कभी-कभी आत्मा उसे रेगिस्तान में ले जाती है। एक और जगह जहां आत्माएं रह सकती हैं और लोगों के साथ काम कर सकती हैं।

लेकिन कृपया कोई गलती न करें। जैसा कि मैंने इस व्याख्यान में कहा है, आप एक बात पर गौर करना चाहते हैं जो ल्यूक आपको याद दिलाना चाहता है: जैसे ही दुष्ट आत्मा से ग्रस्त व्यक्ति ने यीशु को देखा, उसने यीशु को पहचान लिया। दुष्ट आत्माएँ यीशु को पहचानती हैं। मैं इस तथ्य से थक गया हूँ कि 21वीं सदी में, मैं बहुत से मंत्रियों से मिलता हूँ। जैसे ही वे किसी को यह कहते हुए सुनते हैं, आप ईश्वर के महान व्यक्ति हैं, उन्हें लगता है कि वह व्यक्ति भविष्यवाणी कर रहा है।

और वह व्यक्ति अपनी स्थिति की पुष्टि कर रहा है। वे अपनी स्थिति के प्रति इतने सचेत हैं कि वे इतने घमंडी हो जाते हैं, और उन्हें लगता है कि परमेश्वर उन्हें महान बता रहा है। मैं आपको बताता हूँ कि लूका हमें क्या बता रहा है।

जो लोग दुष्टात्मा से ग्रस्त हैं, वे उन लोगों के साथ आने वाले अधिकार को पहचानते हैं जो परमेश्वर के राज्य का संदेश और शक्ति लेकर आते हैं। और इसलिए, वह व्यक्ति क्या कहता है? वह यीशु को परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र कहता है। क्या यीशु परमप्रधान परमेश्वर का पुत्र है? हाँ।

क्या यीशु को यह कहना चाहिए, ओह हाँ? हाँ, मैंने हमेशा सोचा था कि मैं सर्वोच्च परमेश्वर का पुत्र हूँ। नहीं, नहीं।

लूका को पढ़ें, जब यीशु का सामना दुष्टात्माओं से ग्रस्त लोगों से होता है, तो वे अक्सर उसे पहचान लेते हैं। और जब वे उसे पहचान लेते हैं और जानते हैं कि वह प्रार्थनाओं में नहीं है, तो वे विनती करने लगते हैं कि वह उन्हें पीड़ा न दे। यीशु बहक नहीं जाते।

इस तथ्य से कि जो लोग भूत-प्रेत से ग्रस्त हैं, वे अपने अंदर काम कर रही आत्मा को पहचान सकते हैं। और मुझे उम्मीद है कि आप प्रभावित नहीं होंगे। लेकिन प्रशंसा साझा करें।

कोई कहता है, हे ईश्वर के आदमी, तो तुम कहते हो, ओह हाँ, मैंने हमेशा सोचा था कि मैं ईश्वर का आदमी हूँ। दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति के पास आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि थी, दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति के पास। और यह सही भी है, जिससे पता चलता है कि यीशु पुत्र है।

योग्यता पर ध्यान दें। सर्वोच्च परमेश्वर। यह एक गैर-यहूदी क्षेत्र है।

वह यह कह रहा है कि यीशु सबसे महान कथाओं का पुत्र है। दूसरे शब्दों में, यदि कोई ईश्वर है जिसके पास शक्ति और अधिकार है, तो वे यीशु के पास मौजूद शक्ति को स्वीकार करते हैं। और जब यीशु उसके साथ व्यवहार करेगा, तो हम देखेंगे।

हम देखेंगे कि राक्षसी को मुक्ति मिलेगी। राक्षस उसमें से निकलकर उस क्षेत्र के सूअरों में निवास करेंगे। सूअर झील की ओर भागेंगे और मर जाएंगे।

गवाह यह देखने के लिए उस जगह की ओर आकर्षित होंगे कि क्या हो रहा है। और वे इतने आश्चर्यचकित होंगे कि वे यीशु से उस क्षेत्र से चले जाने के लिए भी कहेंगे। लेकिन वह व्यक्ति अपने जीवन में एक क्रांतिकारी परिवर्तन देखेगा।

वह व्यक्ति जो अपने आपको सही दिमाग से नहीं रखता था और बहुत हिंसक है। जब वह यीशु से शांति से मिलता है तो लोग उसे देखने आएंगे। वह व्यक्ति जो राक्षसों से ग्रस्त था और आत्म-विनाश में लिप्त था, बिना कपड़ों के रहता था, वह यीशु के पास एक नई पहचान के साथ पाया जाएगा।

वह व्यक्ति जो कब्रों या रेगिस्तान में रहने वाले लोगों के बीच रहने के लिए जगह नहीं ढूँढ़ पाया, वह भीड़ के आने पर यीशु के चरणों में बैठे एक शिष्य की मुद्रा में पाया जाएगा। वह व्यक्ति यीशु से उसके साथ चलने के लिए कहेगा। न केवल उस समय यीशु के चरणों में बैठा एक शिष्य होगा, बल्कि यीशु से पूछेगा कि क्या वह अब उसके साथ चल सकता है।

पद 34 जब चरवाहों ने यह जो हुआ था देखा, तो भागकर नगर और गांव में समाचार सुनाया। तब लोग यह जो हुआ था देखने के लिये निकले। और यीशु के पास आए, और उस मनुष्य को पाया।

उन्होंने पाया कि वह आदमी, जिससे दुष्टात्माएँ निकल गई थीं, अब यीशु के पैरों के पास बैठा था, नंगा नहीं बल्कि कपड़े पहने हुए। अब वह हिंसक नहीं था और न ही बेतहाशा भागता-दौड़ता था, बल्कि वह पूरी तरह से होश में था। और वे डर गए।

और जिन्होंने यह देखा था, उन्होंने बताया कि दुष्टात्मा से ग्रस्त व्यक्ति कैसे ठीक हो गया है। तब आस-पास के सभी लोगों ने उससे विनती की कि वह हमारे पास से चला जाए, क्योंकि वे बहुत डर गए थे। इसलिए वह नाव पर चढ़ गया और वापस लौट आया।

आयत 38 पर ध्यान दें: जिस मनुष्य से दुष्टात्माएँ निकली थीं, वह उससे विनती करने लगा कि वह उसके साथ रहे। परन्तु यीशु ने उसे यह कहकर विदा किया, कि अपने घर लौट जा। अब वह अपने घर जा सकता है।

अपने घर वापस जाओ और बताओ कि परमेश्वर ने तुम्हारे लिए कितना कुछ किया है। और वह चला गया। पूरे शहर में प्रचार करते हुए कि यीशु ने उसके लिए कितना कुछ किया है।

अब वह परमेश्वर के राज्य का संदेश लेकर चल रहा है, यह घोषणा करते हुए कि यीशु ने उसके लिए कितना कुछ किया है। मैं यहाँ एक छोटा सा अभ्यास प्रस्तुत करना चाहूँगा। मैं एक अफ्रीकी लड़का हूँ।

मैं ऐसे माहौल में बड़ा हुआ जहाँ बहुत सारी मूर्तिपूजक गतिविधियाँ होती थीं। शैतानी गतिविधियाँ, शैतानी भूत-प्रेत और मूर्तिपूजक चीज़ें हर जगह मौजूद हैं। इस वजह से, जहाँ मैं बड़ा हुआ, वहाँ अंधविश्वास का स्तर बहुत बढ़ गया था।

मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरे लोगों में कोई भी प्राकृतिक कारण से नहीं मरता। हमें मेथुसेलह की तरह जीना चाहिए। लेकिन हर चीज़ का एक आध्यात्मिक कारण होता है।

लेकिन दूसरी तरफ़ यह भी है कि यहाँ बहुत सारी शैतानी गतिविधियाँ होती रहती हैं। जैसे-जैसे मैं बड़ा हो रहा था, जैसे-जैसे ईसाई धर्म इस क्षेत्र में उभरने लगा, हमने पाया कि कभी-कभी सुसमाचार साझा करने के लिए आने वाले विश्वासी सिर्फ़ लोगों के साथ प्रार्थना कर रहे होते थे। और अचानक, हम हिंसक अभिव्यक्तियाँ देख लेते थे।

कभी-कभी लोग ऐंठन महसूस करते हैं। और वे यीशु के नाम पर प्रार्थना करते हैं। और हम देखते हैं कि उनमें से कुछ लोग आज़ाद हो जाते हैं।

हम ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्हें मिर्गी जैसी बीमारी है। और वे सुसमाचार में हिस्सा लेते हैं, और उन्हें ऐंठन होती है, और उन्हें दौरे पड़ते हैं। और वे प्रार्थना करते हैं।

एक बहुत ही छोटे लड़के के रूप में, मैं गहरी दिलचस्पी के साथ देख रहा था। एक धर्मनिष्ठ युवा कैथोलिक लड़के के रूप में, मैं बहुत संशयी था। मैंने ऐसी कई बैठकों को जितना संभव हो सके उतना विचलित करने के लिए हर संभव प्रयास किया क्योंकि यह मेरे लिए कैथोलिक नहीं था।

लेकिन फिर, जब मेरे गांव में कैथोलिक करिश्माई नवीनीकरण की शुरुआत हुई, तो मैं उस समूह में शामिल हो गया। और फिर मुझे एहसास होने लगा कि जैसे-जैसे हम प्रार्थना और उपवास में अधिक समय लगाते हैं, वैसे-वैसे हम इन चीज़ों को भी देख रहे हैं। हम लोगों के साथ सुसमाचार साझा करेंगे।

हम यीशु के नाम पर प्रार्थना करते थे। कैथोलिक करिश्माई नवीनीकरण में मेरे समूह में हम जिद्दी समूह बन गए थे जो कहते थे कि हम हेल मैरी के साथ कुछ भी प्रार्थना नहीं करेंगे, और हम यीशु के नाम पर प्रार्थना करेंगे। और हम लोगों को मुक्ति पाते हुए देखते थे।

तेजी से आगे बढ़ें। मैंने बहुत से ऐसे लोगों को देखा है जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त हैं और उन्हें मुक्त कर दिया गया है। मैंने ऐसे लोगों को सुना है जो मूर्तिपूजक मंदिरों में हैं और वे इस बारे में बात करते हैं कि जब उनके बच्चों ने यीशु को अपना जीवन दे दिया तो उन्होंने क्या खो दिया क्योंकि वे अब अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से उन्हें नियंत्रित नहीं कर सकते थे।

दोस्तों, मुझे नहीं पता कि आप अभी कहाँ हैं, लेकिन इस विशेष मामले से एक रेखाचित्र लेने के लिए, मैं आपको बता दूँ कि यीशु का नाम अभी भी लोगों को आज़ाद कर रहा है। और वास्तव में आज़ाद कर रहा है। ब्राज़ील, इक्वाडोर, हैती, घाना, नाइजीरिया, मिस्र, केन्या, एशिया, भारत और चीन के भूमिगत चर्च से जो लोग दुष्टात्मा से ग्रस्त हैं।

भगवान उन लोगों को मुक्त कर रहे हैं जो दुष्टात्माओं से ग्रस्त हैं। अगर यह आपकी विश्वदृष्टि नहीं है तो मैं आपको समझाने के लिए यहाँ नहीं हूँ। मैं बस आपके साथ कुछ ऐसी बातें साझा कर रहा हूँ जो हममें से कुछ ईसाइयों के लिए रचनात्मक रही हैं।

मुद्दा यह है कि मैंने परमेश्वर के राज्य की शक्ति को देखा है जिसके बारे में लूका यहाँ लिखता है। यह उन लोगों को चंगा करता है जो नष्ट हो चुके हैं या जिन्हें शैतानी शक्तियों द्वारा नष्ट किया जा रहा है। मुझे जॉन द्वारा लिखे गए शब्द याद आते हैं जब उन्होंने कहा था, जब मनुष्य का पुत्र तुम्हें स्वतंत्र करेगा, तो तुम सचमुच स्वतंत्र हो जाओगे।

हाँ। यहाँ, दुष्टात्मा से पीड़ित और सैनिक ने इसका अनुभव किया, और हम जानते हैं कि यीशु के साथ मुठभेड़ के बाद, 39 की अंतिम आयत में, वह एक गवाह बन गया। वह शहर में गया, हमें बताया गया है, पूरे शहर में, पूरे शहर में, यह बताते हुए और घोषणा करते हुए कि यीशु ने उसके लिए क्या किया था।

यही बात है। यह दिखावा नहीं है। यह किसी भी भावना या किसी भी तरह की बहस नहीं है।

क्या परमेश्वर ने किसी के जीवन को बदलकर उसे समृद्ध बनाया है? लूका में, परमेश्वर के राज्य में शक्ति न केवल यीशु की तूफान को शांत करने की क्षमता में प्रकट होती है, बल्कि सेना से ग्रस्त किसी व्यक्ति को मुक्त करने और चंगा करने की उसकी शक्ति में भी प्रकट होती है। अगर हम इसका मतलब 6,000 शैतानी सैनिकों से लें और उन्हें मुक्त करें। परिणाम यहाँ महत्वपूर्ण है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे हम अटकलबाजी में घसीटना चाहते हैं। जब यीशु दृश्य में आए, तो कोई व्यक्ति जो कब्र में रहता है, जो नंगा है, जिसे कभी-कभी जंगल में ले जाया जाता है, जो अपने सही दिमाग में हो सकता है, वह घर जा सकता है और यीशु में उसने जो अनुभव किया है, उसकी खबर फैलाना शुरू कर सकता है। लूका 8 में यीशु के साथ चमत्कारी मुठभेड़। एक है तूफान का शांत होना।

दूसरा है गेरिज़िम राक्षसी की रिहाई। लेकिन तीसरा एक बहुत ही दिलचस्प परिदृश्य है जिस पर हमें गौर करना चाहिए। और वह है जैरस और रक्तस्राव से पीड़ित एक महिला के बारे में।

पद 40 से। अब, जब यीशु वापस आया, तो भीड़ ने उसका स्वागत किया, क्योंकि वे सब उसका इंतज़ार कर रहे थे।

और यार्डर नाम एक मनुष्य जो आराधनालय का सरदार था, आया, और यीशु के पांवों पर गिरकर बिनती की, कि मेरे घर चल; क्योंकि मेरी एकलौती बेटी है।

वैसे, ल्यूक ही एकमात्र व्यक्ति है जो बेटी को इकलौती बेटी कहता है। लगभग 12 साल की उम्र। और वह मर रही थी।

और यीशु चला गया। लोग उसके चारों ओर इकट्ठे हुए। वहाँ एक स्त्री थी जिसे बारह वर्ष से रक्तस्राव हो रहा था।

और यद्यपि उसने अपनी सारी कमाई वैद्यों पर खर्च कर दी थी, फिर भी वह किसी के द्वारा ठीक नहीं हो सकी। वह उसके पीछे आई और उसके वस्त्र के छोर को छू लिया। और तुरन्त उसका रक्त बहना बंद हो गया।

यीशु ने पूछा, "मुझे किसने छुआ?" जब सबने इनकार किया, तो पतरस ने कहा, "हे प्रभु, भीड़ ने तुम्हें घेर लिया है। भीड़ ने तुम्हें घेर लिया है। और वे तुम पर दबाव डाल रहे हैं।"

यीशु ने कहा, किसी ने मुझे छुआ है, क्योंकि मुझे लगा कि मुझ में से सामर्थ्य निकली है। और जब उस स्त्री ने देखा कि वह छिपी नहीं है, तो वह काँपती हुई उसके सामने आई और गिर पड़ी।

उसने सब लोगों के सामने बताया कि उसने उसे क्यों छुआ था और वह कैसे तुरन्त अच्छी हो गई थी। फिर उसने उससे कहा, बेटी, तेरे विश्वास ने तुझे चंगा कर दिया है।

शांति से जाओ। वह अभी बोल ही रहा था कि शासक के घर से कोई आया और बोला, "तुम्हारी बेटी मर गई है। अब शिक्षक को परेशान मत करो।"

यीशु ने यह सुनकर उसको उत्तर दिया, कि मत डर, केवल विश्वास रख, तो वह अच्छी हो जाएगी। जब लोग घर पर आए, तो उसने घर में आकर पतरस और यूहन्ना और याकूब और लड़की के माता-पिता को छोड़, और किसी को अपने साथ भीतर आने न दिया।

और सब लोग उसके लिये रो रहे थे और विलाप कर रहे थे। परन्तु उस ने कहा, मत रोओ, क्योंकि वह मरी नहीं, परन्तु सो रही है।

वे उस पर हंसने लगे। क्योंकि वे जानते थे कि वह मर चुकी है। फिर भी उसने उसका हाथ पकड़कर पुकारा और कहा, "बेटी, उठो।"

और उसकी आत्मा वापस आ गई। वह तुरंत उठ खड़ी हुई। उसने आदेश दिया कि कोई उसे कुछ खाने को दे।

और माता-पिता आश्चर्यचकित थे। लेकिन उसने उन्हें आदेश दिया कि वे किसी को न बताएं कि क्या हुआ था। लूका 8 में यह आखिरी चमत्कारी मुठभेड़ अविश्वसनीय है।

क्योंकि इस मुठभेड़ में, इससे पहले कि मैं आपको बताऊँ कि यहाँ क्या हो रहा है, मैं आपको लूका द्वारा इसमें शामिल पात्रों के चरित्र चित्रण के बारे में याद दिलाना चाहता हूँ। यार्जर एक प्रमुख व्यक्ति था। आराधनालय का शासक।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण व्यक्ति। यह उस महिला के विपरीत है जिसे 12 साल से रक्तस्राव हो रहा है, जिसे बहिष्कृत किया जाना चाहिए, जिसके पास कोई नहीं है, अछूत है। हाँ, यीशु उन सभी के साथ व्यवहार कर रहा था।

यीशु इस परिदृश्य में उन सभी से निपट रहे थे। और भीड़, आप जानते हैं, कभी-कभी जब मैं यीशु के बारे में सोचता हूँ, तो मैं हमेशा भीड़ के बारे में सोचता हूँ। भीड़ बिलकुल यीशु का अनुसरण करने जैसी है।

मुझे नहीं लगता कि उन्हें पता है कि वे क्या चाहते हैं। मुझे लगता है कि वे सिर्फ उत्सुक दर्शक हैं। कभी-कभी मुझे यकीन नहीं होता कि वे चीयरलीडर हैं या नहीं।

कभी-कभी मुझे लगता है कि वे किसी के चमत्कार में बाधा डालते हैं। लेकिन भीड़, मेरा मतलब है भीड़, भीड़, मेरा मतलब है भीड़। मुझे नहीं पता कि कभी-कभी वे बस क्यों अनुसरण करते हैं, अनुसरण करते हैं, अनुसरण करते हैं।

जब सब कुछ उनके इर्द-गिर्द हो रहा हो। लेकिन मैं उन दो किरदारों से जुड़ी कुछ बातों पर बात करना चाहूँगा, जिनका यीशु से चमत्कारिक रूप से सामना हुआ। उनमें से एक है यार्जर।

यार्जर एक आराधनालय शासक था। आराधनालय शासक होने का मतलब है आराधना कार्यक्रमों की भौतिक व्यवस्था के लिए जिम्मेदार होना। अगर आप चाहें तो आराधनालय में होने वाली गतिविधियों की देखभाल करना।

वह एक प्रमुख व्यक्ति थे, और यहूदी समुदायों से तात्पर्य है कि यहूदी समुदायों के अधिकांश लोग उन्हें जानते होंगे। वह उस स्थान पर एक बहुत ही महत्वपूर्ण जिम्मेदारी रखता है जहाँ वे पूजा और अन्य कार्यक्रमों के लिए मिलते हैं। यह आदमी घुटने टेकने और यीशु से अपनी 12 वर्षीय बेटी के बारे में बात करने के लिए आता है।

12 साल की उम्र का मतलब है यौवन की उम्र। यहूदी आम तौर पर अपने बच्चे की शादी 12 साल की उम्र में कर देते थे। मैंने बचपन की कहानी में बताया था कि मरियम की शादी संभवतः 12 साल की उम्र में जोसेफ से कर दी गई थी, लेकिन जोसेफ 13 साल की उम्र तक शादी को पूरा नहीं कर सका।

यहाँ, एक प्रमुख व्यक्ति, जैरस की एक बेटी है, और बेटी 12 साल की है, ऐसी महत्वपूर्ण उम्र में जब एक पिता के अपनी बेटी के लिए सारे सपने दांव पर लगे होते हैं। एक पिता का सपना है कि वह अपनी बेटी की शादी देखे और एक प्रमुख व्यक्ति के साथ तालमेल बिठाए, जिससे बेटी के लिए एक बहुत ही बढ़िया पति मिलने की संभावना है।

पिता के पास ये सारे सपने हैं। पिताओं के सपनों की कल्पना कीजिए। इस लड़की के बारे में सभी तरह के अनुमान हैं, और लड़की बीमार पड़ गई और बहुत मुश्किल स्थिति में आ गई।

याईर को इस स्थिति से निपटना पड़ा। हम इस विशेष विवरण में उस महिला के जोखिम और लिंग प्रतिक्रियाओं के संदर्भ में कुछ बातें देखेंगे जो यीशु के साथ व्यवहार करेगी। और यह तथ्य कि उसे 12 वर्षों से रक्तस्राव हो रहा है।

मैं नहीं चाहता कि आप इसे भूल जाएँ। इस महिला को तब से रक्तस्राव हो रहा है जब से याईर की बेटी जीवित थी। इसका मतलब यह है कि याईर की बेटी के पास 12 साल तक जीवन था, और वह इसे खो रही थी।

रक्त स्राव से पीड़ित महिला 12 साल से जीवित नहीं थी और उसे यीशु से मिलने की ज़रूरत थी। इस घटना के दौरान बहुत जोखिम का अनुभव होने वाला है। रईस की बेटी लाइन पर है, लेकिन यहाँ कोई नहीं है, और मैं इसे मध्यस्थता या दिव्य आयोजन कहता हूँ।

कुछ होने वाला है। वह अनाम महिला जिसने बहुत कष्ट झेले हैं, जब तक याईर की बेटी जीवित रही, वह अपने चमत्कारी अनुभव के लिए यीशु के पास आएगी। रक्तस्राव, लेविटिकल कोड में यहाँ रक्त के मुद्दे का नाम दिया गया है, जिसे एक विकार के रूप में समझा जाता है।

इससे वह अशुद्ध हो जाएगी, और इससे वह जिन लोगों को छूएगा वे भी अशुद्ध हो जाएंगे। लेकिन यह महिला अब और नहीं जी सकती थी। 12 साल काफी हैं।

उसने किसी और के निमंत्रण पर यह विश्वास करने का साहस करने का फैसला किया कि अगर वह केवल यीशु को छू लेगी, तो कुछ हो जाएगा। जब भी मैं इस महिला के बारे में सोचता हूँ, तो मैं उन बहुत से लोगों के बारे में सोचता हूँ, जिनसे मैं मिला हूँ, जिनकी बीमारियों ने उन्हें शर्मिंदगी में जीने पर मजबूर कर दिया है और जैसे कि किसी को परवाह नहीं है। लेकिन आप देखिए, ल्यूक हमें बताना चाहता है कि यीशु के साथ, परमेश्वर के राज्य के साथ, विश्वास करना और एक साहसी विश्वास लेना परिणाम दे सकता है।

यह महिला यीशु के पास आने के लिए वह कदम उठाने के लिए तैयार थी। हमें बताया गया है कि उसने अपना सारा पैसा चिकित्सकों पर खर्च कर दिया था। ल्यूक के बारे में सोचिए जो एक चिकित्सक था और एक ऐसी महिला के बारे में लिख रहा था जिसने इस रक्तस्राव को ठीक करने की कोशिश में अपने सारे संसाधन खर्च कर दिए थे।

लेकिन यह काम नहीं कर रहा था, और वह यीशु से मिल जाएगी। इससे पहले कि मैं कुछ त्वरित निष्कर्ष निकालूँ या कुछ त्वरित अवलोकन करूँ, मैं आपका ध्यान कुछ सामान्य बातों की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ जो याईर और इस महिला के बीच चल रही थीं। लूका, अपनी बेहतरीन साहित्यिक कलात्मकता में, इस वृत्तांत को इतने विस्तार से बताता है।

लूका हमें बताता है कि याईर गिर गया, और औरत गिर गई। वे एक दूसरे को छूँगे। यीशु उस बच्चे को गोद में लेंगे, जो 12 साल का है।

स्त्री चुपके से यीशु को छू लेगी। अशुद्धता का खतरा था। स्त्री का यीशु को छूना यीशु को अशुद्ध कर देगा।

और संभावना यह है कि यीशु को छूने के लिए भीड़ में से चुपके से निकलने से पहले ही वह महिला बहुत से लोगों को अशुद्ध कर चुकी थी। लेकिन धार्मिक अशुद्धता का जोखिम तो था ही। लेकिन मैं आपको कुछ और भी बता दूँ।

जब यीशु ने किसी मृत व्यक्ति का हाथ पकड़ा तो धार्मिक अशुद्धता का खतरा था। लेकिन आप देखिए, उसका नाम यीशु है। वह सबके लिए आया था।

दोनों ही घटनाओं में हमें बताया गया है कि भय समाप्त हो गया। महिला डर गई थी, और याईर के घर में भी भय था। हमें विश्वास और उद्धार पर जोर देने के बारे में भी बताया गया है।

लूका अध्याय 8 में चमत्कारिक मुठभेड़ों में, विशेष रूप से याईर और उसकी बेटी तथा रक्तस्त्राव से पीड़ित स्त्री के साथ इस मुद्दे पर, हम उस बात की झलक पाते हैं जो यीशु करने आए थे, जैसा कि उन्होंने अपने मातृभूमि घोषणापत्र में स्पष्ट किया था। वे मुक्ति दिलाने आए हैं। वे आए हैं।

वह मुक्ति लाने आया है। इस महिला ने विश्वास के द्वारा उसे छुआ और अपनी चंगाई प्राप्त की। अब, कल्पना कीजिए कि आप याईर की जगह पर थे।

और इस महिला के साथ इस अवरोधन के कारण, आप सुनेंगे कि आपकी बेटी मर चुकी है। क्या मैं आपको लूका में कथा अनुक्रम के बारे में याद दिला सकता हूँ? लूका हमें याद दिलाना चाहता है कि यीशु के साथ बहुत देर नहीं हुई है। जब यीशु ने कहा कि वह सो रहा है, तो उसने भीड़ की प्रतिक्रिया पर ध्यान दिया।

वे उस पर हँसे। वे उस पर हँसे। आप देखिए, अगर आप एक और घटना के बारे में सोचें जब यीशु लाज़र और जॉन के मामले में मृतकों को उठाने जा रहा था, जब उसने कहा कि वह सो रहा था, तो भीड़ ने ठीक उसी तरह एक मज़ेदार प्रतिक्रिया दी थी।

अगर यह आज का अमेरिका है, तो वे कहेंगे, हाँ। हाँ, तो वह सो रहा है। बस मज़ाक उड़ाने या मज़ाक उड़ाने के लिए।

लेकिन आप देखिए, यीशु के साथ बहुत देर नहीं हुई थी। इस विवरण में, जब तक हम लूका अध्याय 8 के अंत तक पहुँचते हैं, लूका के वर्णन के अनुसार, यीशु ने एक अध्याय में प्रदर्शित किया है कि वह सुसमाचार का प्रचार करने और अपने साथ परमेश्वर के राज्य का शुभ समाचार लाने के लिए आया था। उसने दृष्टांत सुनाए, लोगों को खुले दिल से सुनने के लिए चुनौती दी।

इससे वचन परिपक्व हो जाएगा। उन्होंने चमत्कारी कार्यों से अपने वचनों की पुष्टि की। इसके साथ ही उन्होंने तूफान को शांत किया और प्रकृति को चुनौती दी।

इसके साथ ही, उसने एक ऐसे व्यक्ति को मुक्त किया जो कि सेना में दुष्टात्मा से ग्रस्त था और उसे डेकापोलिस में अपना गवाह बना लिया। इसके साथ ही, एक महिला जो 12 वर्षों से रक्तस्राव से पीड़ित थी, विश्वास के स्पर्श के लिए एक कदम उठाने और अपनी चिकित्सा प्राप्त करने का साहस कर सकी। इतना नाटकीय कि यीशु ने कहा कि उसे उसमें से शक्ति महसूस हुई।

और फिर भी, उसके साथ, परमेश्वर के राज्य के साथ और परमेश्वर के राज्य को लाने के साथ, याईर की बेटी, एक ऐसे पिता की बेटी जिसकी बहुत उम्मीद थी, विवाह योग्य उम्र की बेटी, वह बेटी जो उस समय के बीच मर गई जब यीशु ने उसके स्वास्थ्य के बारे में सुना और जब यीशु घर पहुँचे। याईर को फिर से जीवित किया जाएगा। परमेश्वर का राज्य, जब आता है, मृत्यु, शैतान और पाप से निपटता है।

वह लोगों को स्वतंत्र करता है और उन्हें वह स्वतंत्रता देता है जिसकी घोषणा करने के लिए वह आया था। मुझे उम्मीद है कि जैसे-जैसे आप हमारे साथ इस व्याख्यान श्रृंखला का अनुसरण करेंगे, आप न केवल बौद्धिक रूप से सीखेंगे, बल्कि कभी-कभी, आप एक कदम पीछे हटकर खुद ही परीक्षण को देखने में सक्षम होंगे कि क्या हो रहा है। तूफान में डेकापोलिस की भयावह स्थिति की कल्पना करें।

कल्पना कीजिए कि रक्तस्राव से पीड़ित महिला ने डॉक्टरों के पास अपने सारे संसाधन खर्च कर दिए, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। कल्पना कीजिए कि उसकी बेटी चली गई। यीशु, यीशु, अभी भी जवाब हो सकते हैं।

ईश्वर आपको हमारे साथ सीखने के लिए बहुत-बहुत आशीर्वाद दे। मेरी आशा और मेरी प्रार्थना है कि आप इस सीखने के अनुभव को आत्मसात करें और ईश्वर के राज्य के संदेश को आत्मसात करें, और इस तरह हम सब मिलकर इस दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने का प्रयास करें, क्योंकि हम ईश्वर के राज्य के संदेश और शक्ति के साथ ईश्वर की महिमा करने के लिए जीते हैं।

आपका बहुत-बहुत धन्यवाद, और ईश्वर आपको आशीर्वाद दे।

यह डॉ. डैनियल डारको द्वारा लूका के सुसमाचार पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 12 है, यीशु के साथ चमत्कारी मुलाकातें, लूका 8:22-56।